Yojana the Centre is said to have spent Rs. 175.86 crores in 1983-90, Rs. 189.96 crores in 1990-91 and Rs. 119 crores till December 1991. But unfortunately, there is a vast gap between what has been actually- spent for the scheme and what is claimed to have been spent. I ask the Government, can you point out a single region in the country where you have improved the living conditions of the poor? Showing figures on paper can only make you complacent, but I warn you, if these people are neg-lected and deprived of their minimum right to have a roof over their head, all other plans of yours will collapse. This is because it is the bulk of these people who work for the glory of this country.

Therefore, I urge upon the Government to come up with a comprehensive crash programme to provide free housing facility to all those SCl STs and the poor living in squalor in rural and urban areas. 3.00 p.M. The National Housing Po licy should be revised to provide this basic faddy to all by 2000 A.D. I want the Government to set up monitoring agencies to directly supervise the construction of dwelling units to prevent siphoning off of funds earmarked for this purpose. Unless the Government takes serious note of this problem, I once again warn, the schemes to eradicate diseases, illiteracy and poverty will be completely jeopardized. So I urge upon the Government to swing into pction immediately to safeguard the interests of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes and the weaker sections of the society.

Thank you, Sir.

**Reported Mysterious Death of Freedom Fighter in "Home for Old and Infirm Political Sufferers" at Kalika-pur, Welst Bengal**

**श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया** (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान एक ऐसे मुद्दे की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं जो कि बड़ा ही शर्मनाक है । सैंकड़ों वर्षों की गुलामी सहकर हमारे पूर्व पुरुषों ने स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन लड़ा और स्वतन्त्रता संग्राम के माध्यम से लड़ाई करके आजादी हासिल की । पर मैं जिस घटना को उद्धृत करना चाहता हूं वह बड़ी शर्मनाक बात है और ऐसे राज्य की है जिस राज्य का हिस्सा इस स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में करीब-करीब सबसे ज्यादा है । दुख की बात यह है कि जिस भूमि में विनय बादल दिनेश जैसे लोग पैदा हुए, जिस भूमि ने खुदीराम बोस को जन्म दिया, जिस भूमि न नेता सुभाष चन्द्र बोस को जन्म दिया, जिस भूमि ने रवीन्द्र नाथ टैगोर को जन्म दिया, जिस भूमि ने नुरुल इस्लाम को जन्म दिया उस भूमि में स्वतंत्रता संग्रामियों के प्रति पूरी इज्जत देते हुए, सम्मान देते हुए वहां की राज्य सरकार ने एक ओल्ड एज्ड होम बनाया जहां खासकर स्वतंत्रता संग्रामियों के रहने का बंदोबस्त किया गया । पर दुर्भाग्य की बात यह है कि उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जा रहा है । कभी-कभी मैं जब अपने लोकनायक भवन की बात सुनता हूं उन स्वतंत्रता संग्रामी से जिससे एक दिन ब्रिटिश साम्राज्यवाद का कलेक्टर डरता था या वाइसराय डरता था या गवर्नर डरता था आज जब वह लोकनायक भवन में अपनी पेंशन लेने जाता है या अपने कागज बढ़ाने जाता है तो एक ऐसा अफसर जो 1950 में पैदा हुआ या 1950 के बाद पैदा हुआ उसको किस तरह बेरहमी के साथ दुर्व्यवहार करता है इस बात को मैं सदन में कई बार उठा चुका हूं और आज फिर उठा रहा हूं । ऐसे स्वतंत्रता संग्रामी के साथ पश्चिमी बंगाल के कालि-कापुर के उस ओल्ड एज्जड होम में जो दुर्व्यवहार किया गया वह बड़ा ही शर्मनाक और घृणित व्यवहार है । । यह घटना 13 फरवरी की है जिस प्रितीश घोष के साथ यह घटना घटी है वह 27 फरवरी को परलोक सिधार गए । वह इस ओल्ड एण्ड होम के एक सबस्य थे । उनके कुछ मांगने पर वहां के बार्डन ने 13 फरवरी की मारा । जूतो-चप्पलों से मारा । उनकी उम्र 86 वर्ष की थी इस 86 वर्ष के स्वतंत्रता संग्रामी ने ताम्रपत्र

[श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया]

प्राप्त किया हुआ है । वह कहीं चाय मांगने, दूध मांगने या दवाई मांगने जाता है तो उसको जूतो-चप्पलों मेंसे मारा जाता है । वह मार खाकर रोगग्रस्त हो गया और 27 फरवरी को परलोक सिधार गया । अगर कहानी यहां खत्म हो जाती तो शायद मैं यह बात न उठाता । उसके बाद सेलेन विश्वास जो खुद 75 साल के हैं वह जब शिकायत लेकर सुपरिन्टेंडेंट के कमरे में गए तो उन्हें कमरे से बाहर निकाल दिया गया । उसके बाद वहां के चपरासी और दरबान दोनों ने मिलकर उनको मारा । जूतो-चप्पलों से मारकर कमरे से बाहर कर दिया । उसके बाद कार्तिक दास जिन्हें ताम्रपत्र मिला हुआ है और जिनकी उम्र 80 साल की है और जिन्होंने 1921 में, 1930 में, 1932 में, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ लडाई लडी और लडाई लडते हुए जेलों में गए और जिन पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लोगों ने क्रूर अत्याचार किया, उनको अंग-भंग कर दिया, वे आज ऐसी अवस्था में इस भवन में रहते हैं । उनके साथ भी ऐसा व्यवहार किया गया । उन्होंने रोकर अपना ताम्रपत्र दिखाते हुए कहा कि हमारे साथ जो व्यवहार हो रहा है शायद वह हमारे घर के बाहर जो हमारे झूठन खाकर कुत्ते-बिल्ली पलते हैं वह भी हम से अच्छी तरह रहते हैं । उनको तो झूठन में भी भरपेट खाना मिल जाता है वह भी हमको नसीब नहीं होता ।

इतनी घृणित और इतनी दुर्भावपूर्ण अवस्था, उनकी है और इस पर भी जब कोई कम्पलेंट होती है तो वहां के स्वाधीनता सैनानी, जिनकी आवाज से ब्रिटिश साम्राज्यवादी भी थर्र-थर्र कांपते थे, आज उनकी आवाज को सुनकर वे खुद थर्र-थर्र कांपन ने लगते हैं । वहां पर एन्टी सोशियल एलीमैंट्स ने अपना अड्डा बना रखा है । महोदय, इसकी शुरूआत इस तरह से हुई कि जो जादवपुर की एम० पी० हैं, मृणाल भट्टाचार्य, वे उस भवन को देखने के लिए गई तो उनको वहां की कमियों और उनके साथ जो दुर्भायपूर्ण व्यवहार हो रहा है उसके खिलाफ मैमोरेन्डम दिया गया । यहीं से शुरूआत होती है । उस मैमोरन्डम को पढने के बाद जिस आदमी ने उस मैमोरेन्डम पर दस्तखत किए उनके साथ भी वही जूतों और घूसों से व्यवहार किया गया । इन सब लोगों की उम्र 80 साल से ज्यादा है । इसलिए इस सदन में बैठ कर हम इस दुर्भायपूर्ण घटना के लिए धिक्कार नहीं जता सके और उसकी भर्त्सना न कर सकें तो फिर आगे क्या होगा ? इसलिए मैं आपके माध्यम से यह मांग करता हूं कि कम से कम एक तरह से मैं महसूस करता हूं कि बंगाल जैसा राज्य जिसने स्वतंत्रता सेनानियों को पूरा मान और सम्मान देते हुए हुए एक भवन का निर्माण किया, जहां पर उनको खाना-पीना मिलता है, मेरे ख्याल से भारत में किसी राज्य में यह व्यवस्था नहीं है । लेकिन जिस उद्देश्य से यह किया गया है, वहां के वर्कर्स, वार्डन, और स्टाफ इनको पूरा नहीं करते हैं । इनके दिल में मैल है, उनके दिल में चोर है । उनके दिलों में स्वतंत्रता सैनानियों के लिए कोई मान सम्मान नहीं है । मुझे पता चला है कि पांच आदमियों को ससपैन्ड कर दिया गया है, निकाल दिया गया है । लेकिन बात इतनी-सी नहीं है । यह कोल्ड ब्लडड मर्डर है । मैं आपके माध्यम से मांग करता हूं कि इसकी प्रोपर इंक्वारी की जाय और आप सरकार को निर्देश करें कि राज्य सरकार से बात करके इस कलाप्रिट लोगों के खिलाफ मर्डर का केस दायर करके मुकदमा चलाया जाय और उन पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाय ताकि आइन्दा से कोई भी आदमी किसी स्वतंत्रता सेनानी के सामने आंख उठाने की ओर अंगुली उठाने की हिम्मत न करे ।

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra) Sir, I associate myself with this.

THE MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT (SHRI JAGDISH TYTLER): Everybody, the whole House will associate with this.

SHRI. JAGESH DESAI: I think the whole house will associate with this.

**श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल:** यह बहुत अहम मसला है । इसका सीरियस नोट सरकार को लेना चाहिए ।

†[شری محمد افضل عرف م- اجیل :
یہ بہت اہم مسئلہ ہے - اسکا
سیریس نوٹ سرکار کو لینا چاہئیے -]

श्री राज मोहन गांधी (उत्तर प्रदेश) : महोदय , मैं भी बहुत दुख के साथ अपने आप को इससे साथ एसोसिएट करता हूं ।

SHRI JAGDISH TYTLER: Please tell this to your colleagues, the communists.

**Need for provision of a ship for Haj Pilgrims**

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ शीश अफजल (उत्तर प्रदेश): मोहतरिम, मैंने 12 तारीख को एक मसला इस हाउस में जीरो आवर में उठाया था । खुशी की बात यह है कि उस बात पर उस वक्त पूरे हाउस में कई मैम्बरान ने मेरी उठाई बात का समर्थन किया । लेकिन अफसोस की बात यह है कि सरकार ने अभी तक उस मसले पर क्या ध्यान दिया है उसकी हमें कोई जानकारी नहीं है । हज, इस्लाम के पांच फरीजों में से एक है । एक मुसलमान पर यह वाजिफ है कि अपनी जिन्दगी में तोहीद नमाज, रोजा जकात और हड, इन पांच बातों को पूरा करे । लेकिन मैंने उस दिन यह बात बताई थी कि हिन्दुस्तान के तकरीबन हर साल एक लाख हाजी सऊदी अरेबिया हज करने को जाना चाहते हैं । मगर चूंकि यहां फारन एक्सचेंज की कमी है और मुल्क की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि हम जेरबार कर सकें । इसलिए हुकूमतें हिंद ने जो कोटा मुकरर किया है हम उसी को इक तरफा करते हैं और उसी को पूरा समझ कर उसी तादात में भेजने की कोशिश करते हैं । हज की दरख्वास्तों की लाटरी सिस्टम से जाने वालों का चुनाव करते हैं । लेकिन इस साल एक बहुत ही अहम परेशानी हमारे सामने आई । खुशी की बात यह है कि शिपिंग और ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर श्री जगदीश टाइटलर साहब यह पर बैठे हुए हैं । इस परेशानी से वे खुद भी वाकिफ हैं इसलिए कि पिछले साल में उन्होंने अपना भरपूर कोआपरेशन हाजियों को शिप से भेजने के सिलसिले में दिया । मैं आपको अपना बताना चाहता हूं कि पहले एम० जी० अकबर नाम का जहाज हाजियों को सऊदी अरेबिया ले जाया करता था ।

लेकिन पिछले साल उसकी लाइफ खत्म हो गयी और इस साल के लिए हमारे पास कोई शिप नहीं था । हमने जगदीश टाइटलर साहब से दरख्वास्त की, हमने होम मिनिस्टर साहब से दरख्वास्त की , हमने बाद में वजीरे आजम साहब से दरख्वास्त की, मैं सेंट्रल हज कमेटी की तरफ से यह बात कह रहा हूं । कहा जाता है कि वजीरे आजम साहब की दिलचस्पी के बाद हमारे लिए इसका इंतजाम किया गया । अंडमान-निकोबार के पास एक शिप था । उसको कहा गया क्योंकि अप्रैल के अंदर पोलैंड से नया शिप आने वाला है, वह वहां पर लग जाएगा और अंडमान निकोबार वाला जो जहाज है, हज यात्रियों को ले जाने के लिए उसका इस्तेमाल कर सकते हैं । लेकिन बडे अफसोस की बात है, मैं अंडमान निकोबार के लोगों की जरूरतों को बहुत अच्छी तरह समझता हूं, मुझे इसका उतना ही अहसास है जितना कि अंडमान निकोबार के लोगों को होना चाहिए ।
. . . (व्यवधान) . . .

मैं यह अर्ज कर रहा था कि वह जहाज जो कि 7 अप्रैल को मुम्बई बंदरगाह से रवाना होना चाहिए था और 14 तारीख को हाजियों का पहला जत्था लेकर सऊदी अरब पहुंचने वाला था उस जहाज को 19 तारीख को मद्रास से मुंबई जाना था और 19 अप्रैल से पहले 14 तारीख को पोर्ट ब्लेयर से मद्रास जाना था । लेकिन वहां भारतीय जनता पार्टी की यूनिट ने एक रिट पेटीशन दायर कर दी और उस पर गालिबन स्टे ले लिया । यहां जो हमारे लोक सभा के कांग्रेस (आई) के सदस्य हैं, उन्होंने तो इसके खिलाफ एजीटेशन चलाया कि यह शिप जो है यह हाजियों के लिए इस्तेमाल न हो । मुझे वह जो एजीटेशन है या वह जो स्टे लिया गया है, उस पर कोई बात करने का हक नहीं है । हमारी . . . (व्यवधान) . . . मेरे कहने का मतलब सिर्फ इतना है कि हम सरकार का ध्यान इस ओर दिलायें कि जरूरी इंतजाम आप

†[] Transliteration in Arabic Script.